'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

# विनोबा-प्रवचन

( सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित )

वर्ष ३, अंक ४१ | वाराणसी, मंगलवार, ७ अप्रैल, १९५९ | पच्चीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

कायमसर (सीकर) १९-३-'५९

## मालकियत की भावना मिटाने से ही सामाजिक रीति-रिवाज में परिवर्तन संभव

हम आठ वर्षों से पैदल यात्रा कर रहे हैं। यह आपको मालूम है। बिहार, उत्तरप्रदेश, आन्ध्र, तमिलनाड, केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान इन सब प्रदेशों में घूम चुकने के उपरान्त हम यहाँ आये हैं। रोज-रोज सभा में यही कहते हैं कि आप गाँववालों में एकता होना परम आवश्यक है। आज की परिस्थिति तो यह है कि सभी अलग-अलग रहते हैं और कोई किसीकी मदद नहीं करना चाहता। मगर अब ऐसा करने से काम नहीं चलेगा। हम अपने परिवार में जिस तरह एक-दूसरे की चिंता करते हैं, वैसी ही चिंता प्रत्येक को प्रत्येक गाँववाले के विषय में करनी चाहिए। गाँव को हमें अपना घर समझना चाहिए। अगर गाँव में कोई भूखा रहता है तो हमें उसकी मदद अवश्य करनी चाहिए। उसके खाने-पीने का प्रबन्ध करना चाहिए! इसकी जिम्मेवारी गाँववाले लें तो बड़ा ही अच्छा हो।

### मालकियत मिटे

हम एक बहुत ही सादी बात बतलाने के लिए घूम रहे हैं। वह यह है कि आपके पास जो भी जमीन है, उसे आपको अपने गाँव की समझना चाहिए और आपस में प्रेम-भाव बरतना चाहिए। अगर आपको एक-दूसरे की मदद नहीं करनी है तो गाँव में रहने का कोई अर्थ ही नहीं है। गाँव में रहकर अगर आप एक-दूसरे की मदद नहीं करते तो वह गाँव नहीं, बल्कि जंगल है। जंगल में जिस प्रकार शेर किसी दूसरे जानवर की परवाह नहीं करता। एक शेर एक तरफ पड़ा रहता है, दूसरा दूसरी तरफ, ठीक ऐसी ही परिस्थिति हमारी है। मगर हमें इस प्रकार नहीं रहना है। जितनी जमीन है, सभी सबकी बना दें। ग्रामसभा के नाम पर वह जमीन होगी।

पाँच हजार गाँव के लोगों ने ग्रामदान दिया है। सभीको मिलकर उसमें खेती करनी चाहिए। न तो कोई अपनी जमीन बेचे और न रेहन रखे, क्योंकि ऐसा करने से ही हमारी जमीन हम खो बैठते हैं।

इन दिनों दूध बेचा जाता है, मक्खन बेचा जाता है, बैल बेचा जाता है और तो और लड़का भी बेचा जाता है। चार साल तक बैल को खिलाया-पिलाया। उसके दाँत अच्छे हैं, इस लिए ५०० रुपये आ सकते हैं, यही हाल लड़के के संबंध में भी है। लड़का पढ़ा-लिखा है। इसलिए ५००० रुपये दहेज में माँगे जाते हैं। लड़कियों को भी कुछ धनलोलुप बेच देते हैं। अन्न भी बेचते हैं। यह सब नाजायज है—एकदम अनुचित! यह सब इसलिए होता है कि लोग उन-उन वस्तुओं पर अपनी मालकियत का दावा रखते हैं। इसलिए इस मालकियत को ही हमें खत्म करना है। ग्रामदान की यही घोषणा है कि जमीन हमारी नहीं, गाँव की है, भगवान की है और है सबकी। इसका मालिक अगर कोई है तो सिर्फ भगवान। यह भगवान की पत्नी है। अगर हमारे पैर का स्पर्श इसे होता है, तो हम क्षमा माँगते हैं—"विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे"

### हमें जीवंत हनूमान चाहिए

दूसरी बात हमें यह बतलानी है कि प्रत्येक गाँव में सेवा करनेवाला चाहिए। आज तो जो सेवक हैं, वे केवल गृह-सेवक हैं। हमें तो ग्राम-सेवक चाहिए। ऐसा सेवक, ऐसा शांति-सैनिक, जो सबकी निःस्वार्थ सेवा करे। रास्ते पर कचरा मैं भी डालता हूँ और मेरे सामनेवाला भी। अब रास्ता कौन साफ करे? इसका अर्थ यह कि हम गाँव की सफाई का खयाल नहीं करते। उसके लिए हमें शांति-सैनिक याने हनूमान—हिलता-डोलता हनूमान—चाहिए। मन्दिरों में रहनेवाले पत्थर के हनूमान से अब हमारा काम चलनेवाला नहीं है। ऐसा हनूमान, जो गाँव की रक्षा और सेवा सुचारु रूप से कर सके।

तीसरी बात है—घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखने की। जब मैं ऐसी बात बोलता हूँ, तब हमारी यह कुसुम बोलती है कि बाबा रोज वही बोलता है। इसलिए वह अब क्या लिखेगी? लेकिन वह नहीं जानती कि क्या राम-नाम की भी कोई थकान आती है? हमने आज दूध लिया, कल भी लिया था, परसों भी लिया था। रोज दूध-दूध-दूध! हमें हर रोज खाने में थकान नहीं आती, वैसे ही बाबा को रोज बोलते-बोलते थकान नहीं आती है। उसके लिए तो यह राम-नाम का जप है। ● ● ●

प्रार्थना-प्रवचन

रतननगर (राज०) २१-३-'५९

# सर्वोदय-आन्दोलन करुणा और समानता का राज्य चाहता है

आज सुबह एक भाई से सर्वोदय-पात्र के संबंध में बातें हो रही थीं। हमने सौ प्रतिशत घरों में सर्वोदय-पात्र रखने को कहा। उन्होंने पूछा कि क्या सभी घरों में सर्वोदय-पात्र रखा जाना संभव है ?

मैंने कहा—जी हाँ।

फिर भी वे शंकित ही रहे। इस पर मैंने उन्हें उदाहरण देकर समझाया कि 'दुनिया में जितने लोग हैं, उनमें से सौ प्रतिशत लोग मरेंगे या कम-बेसी ?'

'सौ प्रतिशत' यही उनका जवाब था।

'परन्तु यह होगा कैसे ?' मैंने फिर पूछा !

जब मृत्यु का बुलावा आता है, तब कोई ना नहीं करता। वैसे ही सर्वोदय-पात्र का बुलावा आये तो किसी को 'ना' करने की प्रेरणा नहीं होनी चाहिए।

सभी घरोंवाले अपने यहाँ सर्वोदय-पात्र रखें। इसके लिए हमारे कार्यकर्ताओं को अत्यन्त निर्मल और शुद्ध हृदय लेकर लोगों के पास पहुँचना होगा।

## डरने की आदत को बदलना है

मैंने कई बार कहा है कि जनरल अयूब खाँ की आज्ञा होते ही सारा काम हो जाता है तो क्या जो ताकत डर में है, वही ताकत प्रेम में नहीं है ? मार्शल ला होता है या कर्फ्यू लगता है तो घर से बाहर कोई नहीं निकलता। डर से आज्ञा मानने की आदत हो गयी है। लेकिन अब हमें इससे भिन्न आदत डालनी है। वह यह कि कोई हमें डराये तो हम डरें नहीं और दबाये तो दबें नहीं।

एक राक्षस था। उसके पास था—एक आदमी। वह आदमी से मनचाहा काम करवाता था। जब कभी आदमी काम करने में जरा भी आनाकानी करता तो वह खा जाने की धमकी देता था। एक दिन आदमी ने सोचा कि "यह मुझे हर रोज 'खा जाऊँगा, खा जाऊँगा' की धमकी देता है तो क्यों न एक दिन डर छोड़कर देखा जाय !" राक्षस ने जैसे ही उसे अमुक काम करने की आज्ञा दी तो तत्काल वह काम करने से इन्कार कर गया। इस पर उसे राक्षस कहने लगा कि देख, मैं तुझे खा जाऊँगा। आदमी ने कहा 'अच्छी बात है। खा जाइये। एक-न-एक दिन मरना ही है तो फिर मैं मरने से क्यों डरूँ ?' यह जवाब सुनकर राक्षस सन्न रह गया। वह सोचने लगा कि अगर मैं इसे खा जाता हूँ तो फिर मुझे नौकर कहाँ मिलेगा ? उस दिन से राक्षस ने उसे धमकाना बन्द कर दिया।

यही ताकत हम जनता में पैदा करना चाहते हैं कि कोई डरा-धमकाकर काम करवाना चाहे तो वह काम हरगिज न किया जाय। यह चीज हमें अपने घर और स्कूल से शुरू करनी होगी।

स्कूल में लड़का नियमित रूप से नहीं आता। उसे मास्टर साहब पीटते हैं। फिर डर के कारण वह नियमितता सीखता है। परन्तु साथ-साथ डरपोकपन भी सीख जाता है। तराजू में तौल कर देखिये, नियमितता आयी, उससे कितना पाया और डरपोकपन सीखा, उससे कितना खोया। दो आना कमाया और चौदह आना खोया ! नियमितता जड़ गुण है, पर निर्भयता जड़ गुण नहीं। इंजन भी नियमित घूमता है। शरीर का क्या हाल है ? आप हर रोज दस बजे सोने की आदत डालें तो दस बजे नींद आ जायगी, नौ बजे सोने की आदत डालें तो नौ बजे ही नींद आ जायगी। भूख भी जिस समय की आदत डाल दें, उसी समय लग जाया करेगी। इसलिए जड़ का गुण कमा करके चेतन का गुण खो दिया तो बहुत बड़ा नुकसान हुआ। आपमें अनियमितता हो तो उसे मैं उतना बुरा नहीं मानता, जितना कि डरपोकपन को मानता हूँ। डर के साथ आनेवाली नियमितता टिकनेवाली भी नहीं है।

गुरु, माता, पिता आदि बुजुर्ग नियमित जीवन बितायें तो बच्चे सहज ही नियमित रह सकते हैं। लेकिन जब तक बड़े लोग ही अपने आचरण को तदनुरूप नहीं बनाते, तब तक बच्चों की कुछ अनियमितता सहन करनी पड़ेगी। डराकर बच्चे को नियमित बना दिया जायगा तो आगे जाकर फिर वह मारने-पीटनेवाले का वशवर्ती हो जायगा। याने बच्चे को गुलाम बनानेवाली तालीम मिलेगी। इस वास्ते हम जनता को सिखाना चाहते हैं—किसीके डर से कभी कोई काम नहीं करना है।

बिहार की बात है। कहीं से मुझे ऐसी सूचना मिली कि मेरे साथियों ने किसीसे जरा डरा-धमकाकर जमीन प्राप्त की है। मुंगेर की एक बहुत बड़ी सभा में उसी दिन मैंने घोषणा कर दी कि कोई आप लोगों से डरा-धमकाकर जमीन माँगने आये, तो उसे हरगिज मत दीजिये। हम तो जमीन की माँग प्रेम से करते हैं। हिन्दुस्तान में पहले से ही इतना डर है कि उसमें वृद्धि करने की जरूरत हीं नहीं है। डरा-धमकाकर कोई काम करना बहुत ही गलत है। इसलिए माता-पिता अपनी सन्तान को पीटें नहीं। तभी साहस के साथ किसी आक्रामक को लड़का कह सकेगा कि 'तुम मुझे मारना हीचाहते हो तो मारो। उसके बदले मैं तुम्हारा सिर नहीं फोड़ूँगा, पर तुम्हारे अधीन भी नहीं बनूँगा।'

मेरे ये विचार आपको पसन्द पड़ जायँ तो उन पर फौरन अमल करना शुरू कर दीजिये। इस काम में 'लेकिन' नहीं करिये। 'लेकिन' कहने का अर्थ है समझनेवाले के विचारों से असहमति। यदि आप हमारे विचारों से भी विपरीत दृष्टिकोण रखते हैं तो मैं तब तक सब्र करूँगा, जब तक आपको अपने अनुकूल न बना लूँ।

## करुणा का राज्य स्थापित हो

पश्चिम के एक भाई आये थे। वे हमसे पूछने लगे कि आप करना क्या चाहते हैं ? हमने बताया कि ईसा ने 'किंगडम ऑफ गॉड' की बात की है, लेकिन हम 'किंगडम ऑफ काइंडनेस' की स्थापना करना चाहते हैं। यह बात अगर मुझे रोजे कयामत के दिन तक भी समझानी पड़े तो मैं समझाऊँगा और अनुकूल समय की प्रतीक्षा करूँगा। मुझे विश्वास है कि जो शख्स इस विचार को समझेगा, वह अवश्य ही कुछ-न-कुछ काम करेगा, बशर्ते कि उसके हृदय में शुद्धि हो। जैसे बच्चा माँ से कोई चीज माँगता है तो माँ उसे कभी भी ना नहीं कहती। अगर लाचारी से उसे ना करनी पड़ती है तो वह बहुत दुःखित होती है, रोती है। मैं मानता हूँ कि सामने जो शख्स बैठे हुए हैं, वे मेरी माँ हैं, मैं उनका बच्चा हूँ। बच्चे की माँग जरूर पूरी होगी।

## छोटी मुट्ठी, बड़ा संकेत

इस गाँव में १५०० घर हैं। उनमें से ३२१ घरों में सर्वोदय पात्र रखे गये हैं। मैं चाहता हूँ कि हर घर में सर्वोदय-पात्र

हो। सर्वोदय-पात्र में एक मुट्ठी अनाज रोज डालना है। हम जो कुछ खाते हैं, उसमें से एक मुट्ठी अनाज समाज के लिए देना चाहिए। जो खाना हम खाते हैं, उसके मालिक हम नहीं हैं। यह मुट्ठीभर अनाज की बात आयी है। उसमें मालकियत-विसर्जन की भावनाएँ निहित हैं। याने जो चीज हमारे पास है, उसके हम ट्रस्टी हैं, मालिक नहीं। सर्वोदय-पात्र के जरिये यह सिद्धान्त घर-घर में पहुँचाया जा सकता है। फिर हर घर में बच्चा खाने से पहले एक मुट्ठी अनाज डालेगा। उससे बच्चों को मालकियत-विसर्जन की तालीम भी मिल जायगी। यह चीज तो छोटी है और संकेत है बड़ा।

## सोच कर ग्राहक बनें

'ग्रामराज' राजस्थान का सर्वोदय-विचार का मुखपत्र है। यहाँ आज ग्रामराज के कुछ ग्राहक बने। अब वह अखबार हर सप्ताह यहाँ आयेगा। उसे ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए और उस पर मनन भी करना चाहिए। उस पत्र में सारे हिन्दुस्तान के विभिन्न भागों में हो रहे भूदान - ग्रामदान की जानकारी रहती है। घर बैठे ही वह जानकारी आपको मिल जायगी। इस पर कोई यह कहे कि आप कह रहे हैं, इसलिए मैं ग्रामराज का ग्राहक बन जाता हूँ, पर उसे पढ़ूँगा या नहीं, यह नहीं कह सकता, तो मैं उसे कहूँगा कि आप ग्राहक मत बनिये। जो स्वयं तो नहीं पढ़ सकता, पर उसके बच्चे उसको पढ़ कर सुनाते हैं, उसे ग्रामराज का ग्राहक अवश्य बनना चाहिए। साहित्य-प्रचार से हर घर में हमारा विचार पहुँचता है, इसलिए लोग समझ-बूझकर ग्राहक बनेंगे तो बहुत काम होने की सम्भावना है।

## भगवान के नाम पर दीजिये!

यहाँ कुछ जमीनवाले लोग बैठे हैं। वे हमें प्रेम से जमीन देंगे तो कुछ खोयेंगे नहीं। प्रेम पायेंगे। ६ एकड़ में से एक एकड़ जमीन देने से क्या घट जाता है? जितना परिश्रम हम छह एकड़ में करते थे, उतना ही परिश्रम पाँच एकड़ में करेंगे, उतनी ही खाद डालेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि जितनी फसल पहले छह एकड़ में होती थी, उतनी ही पाँच एकड़ में होगी। जिसको एक एकड़ जमीन मिलेगी, वह भी तो फसल बढ़ायेगा! इस तरह अधिक अन्न उत्पन्न होगा और देनेवालों को प्रेम भी प्राप्त होगा।

चीनवालों ने जमीन का मसला हल करने में बहुत पुरुषार्थ किया। वहाँ जो काम हुआ, क्या वही काम हिन्दुस्तान में नहीं हो सकता? हम लोग प्रेम से हिल-मिलकर जमीन के मसले को हल कर लेते हैं तो भगवान की कृपा होगी। जिनके पास जमीन है, वे लोग भगवान का नाम लेकर अवश्य दान करें! आज देने का दिन है। भगवान की कृपा से आप अपने गरीब भूमिहीन भाइयों के लिए कुछ-न-कुछ अवश्य दीजिये।

## शुद्ध हृदयवाले आगे आयें!

हमें शुद्ध हृदयवाले सेवक चाहिए। छोटे बच्चे का हृदय शुद्ध होता है, परन्तु न जाने क्यों बड़े हो जाने के बाद वह शुद्धता कुछ धूमिल हो जाती है। ऐसा क्यों होना चाहिए? क्या हम लोग बच्चे की भाँति शुद्ध नहीं रह सकते? आदिवासी, जंगली लोग छोटे बच्चों की तरह सत्य बोलते हैं। लोग उन्हें बेवकूफ समझते हैं। लेकिन मैं उनके बेवकूफ सत्य की कीमत आपके असत्य से बहुत ज्यादा मानता हूँ। इसीलिए मेरी इस छोटी-सी माँग की पूर्ति आपको करनी चाहिए। हम जितने शुद्ध हृदयवाले होंगे, उतना ही हमारा जीवन यशस्वी होगा, हमारा काम यशस्वी होगा और हमारा राष्ट्र भी यशस्वी होगा। रामायण में शबरी की कहानी है। महाभारत में सुदामा के तंदुल की चर्चा है। शबरी और सुदामा के पास युनिवर्सिटी की डिग्रियाँ नहीं थीं। उनके पास था शुद्ध हृदय।

लोग कहते हैं कि भक्तिकाल में शुद्ध हृदयवाले कहाँ से मिलेंगे। हम कहना चाहते हैं कि युग की रचना करना हमारे हाथ है। हम कलिकाल में भी सतयुग का काम कर सकते हैं और सतयुग में भी कलिकाल का काम कर सकते हैं। कलिकाल में तुलसीदास तथा गांधीजी जैसे महापुरुष हो गये और द्वापर और त्रेता में रावण तथा कंसादि हो गये हैं। इसलिए हमें समझना चाहिए कि हम युग-निर्माता हैं। इस समय हमारे शुद्ध हृदय रखनेवाले लोगों की जो माँग है, वह पूरी की जा सकती है।

## लचर जवाब

आज हिंदुस्तान के लोगों को संयतपूर्वक रहने की आवश्यकता है। संयम नहीं रहा तो लोक-संख्या बढ़ेगी। लोक-संख्या बढ़ने से समाज में अनेक प्रकार के अनिष्ट होते हैं। फिर भी जनता का ध्यान इस ओर नहीं जा रहा है। इसीलिए तो सिनेमाओं को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। जब सरकार से पूछा गया कि ऐसे अश्लील सिनेमाओं का प्रदर्शन क्यों करते हो? जवाब मिला कि 'जिस सिनेमा में खास खराबी न हो, उसे हम रोक नहीं सकते। सिनेमा पर प्रतिबंध लगाना विधान के खिलाफ है।' ऐसा लचर जवाब सरकार को शोभा देनेवाला नहीं है। अगर सिनेमा पर प्रतिबंध लगाना विधान के खिलाफ है तो क्या आप विधान को नहीं बदल सकते? आखिर विधान बनानेवाले कौन हैं?

एक तोता था। वह डाली को पकड़े रहता था और समझता था कि डाली ने ही मुझे पकड़ रखा है। इस वास्ते वह डाली को छोड़ नहीं सकता था। उसी प्रकार हम विधान को पकड़े हुए हैं और लाचारी महसूस कर रहे हैं।

आज इस गाँव में साहित्य-प्रचार का अच्छा काम हुआ है। कार्यकर्ताओं ने घर-घर पहुँचकर लोगों को समझाने का प्रयत्न किया है। कार्यकर्ताओं को अत्यन्त नम्र और शांत स्वभाव रखना चाहिए। कार्यकर्ता किसीके घर जायँ और सामनेवाला कह दे कि आज गाँव में वही ढोंगी विनोबा आया है, उस समय भी कार्यकर्ता गुस्सा न करें! जीवन में धैर्य रखें। सर्वोदय का काम धीरज और शांति रखनेवाले कार्यकर्ता से ही होनेवाला है।

## हरिजन भी मनुष्य हैं

जमाना बदल रहा है। परिस्थितियों में परिवर्तन हो रहा है। अब मनुष्य-मनुष्य के बीच में भेद उत्पन्न करनेवाली समाज-व्यवस्था नहीं टिक सकेगी और न हरिजन-परिजन के भेद ही टिक सकेंगे। हरिजन आखिर हैं कौन? मनुष्य ही न? हम उनके लिए अलग से सुविधाओं की माँग न करें। जहाँ हरिजनों के अधिकारों की चर्चा होती है, वहाँ हरिजनों को पक्का किया जाता है।

बिहार की बात है। मुझे एक हरिजनों का होस्टल दिखलाया गया और कहा गया कि मैं वहाँ अपने विचार भी व्यक्त करूँ। मेरे मना करने पर भी उन्होंने आग्रह नहीं छोड़ा तो मैंने कहा :

इन दिनों हरिजनों के लिए अलग होस्टल बनाना पाप है। उससे हरिजनों की सेवा नहीं होती, असेवा होती है। इसलिए हरिजन हरिजन हैं, ऐसी भावना ही गलत है। हम मनुष्य हैं और हरिजन भी मनुष्य हैं। इसलिए मनुष्य के नाते उन्हें जितने अधिकार हैं, वे सभी मिलने चाहिए। इसी पद्धति से हम हरिजन-परिजन के झगड़ों को खत्म कर सकते हैं। जरूरत है हमारे जाग जाने की।

एक आदमी था। उसे नींद आ गयी। सपने में उसे लगा कि वह खूब बीमार हो गया है। इसलिए खूब दौड़-धूप कर डॉक्टर को बुलाया गया। डॉक्टर ने भी केस को अपने हाथ में नहीं लिया। इससे उसकी परेशानी बहुत बढ़ गयी। झरझर आँसू बहने लगे और अंत में वह जोरों से चिल्लाने भी लगा। पास में बैठे हुए लोगों ने समझ लिया कि इसे कोई भयानक सपना आया है और उसे तत्काल जगा दिया। जैसे ही वह जागा, वैसे ही उसका सपना भी खत्म हो गया और बीमारी भी। सपने की बीमारी के लिए सर्वोत्तम दवा है जगाना।

●●●

स्वागत-प्रवचन

काशीकावास ( राज० ) १३-३'५९

# मन्दी गति न पड़े रे राही, मन्दी गति न पड़े !

अभी आप लोगों ने कवि दुःखायल का भजन सुना। जिसमें उन्होंने कहा है कि 'राही मन्दी गति न पड़े'। हे चलनेवाले मुसाफिर ! तू अपनी गति को मन्द न पड़ने दे। तू डर मत। बारिस के दिन हैं। बड़े-बड़े काले बादल सामने आ रहे हैं। धरती-आसमान को एक कर रहे हैं। पर याद रख, वे तेरी हिम्मत से बड़े नहीं हैं। क्या देखता है ? सामने ऊँचे पहाड़ खड़े हैं। पर भूल मत ! वे भी तेरी हिम्मत से ज्यादा ऊँचे नहीं है। इसलिए 'राही मन्दी गति न पड़े'। मुझे कहने में खुशी होती है कि मैं उनके इस आदेश का पालन कर रहा हूँ। महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रांतों में प्रति दिन आठ-दस मील चलना पड़ता था। लेकिन यहाँ लगभग बारह-तेरह मील भी चलना पड़ रहा है। फिर भी हमारी हिम्मत घटी नहीं है, बढ़ी है। हमारी गति मन्दी नहीं पड़ी, बल्कि तेज हुई है।

साठ साल की उम्र में हमने कहा था कि अभी हम आठ मील चलते हैं। पर हमारी इच्छा है कि हर साल हम एक-एक फर्लांङ्ग और अधिक चलें। यानी सौ साल की उम्र में हम १३ मील चलने की क्षमता प्राप्त करें। अभी हमारी उम्र चौंसठ साल की है। इतने ही समय में हमने आधी गति तो बढ़ा दी। इससे हमें काफी उत्साह मिल रहा है।

हम समझते हैं कि हम आगे-आगे चलेंगे और मृत्यु हमारे पीछे-पीछे हो। अगर उसकी गति आगे हो जायगी तो वह हमें ले जायगी, अन्यथा वह हमसे बहुत पीछे रह जायगी। प्रति वर्ष हमारी गति बढ़ते रहने के कारण कुछ-न-कुछ फासला बढ़ता ही रहता है।

चलनेवाला दीर्घायु होता है। क्योंकि वह आकाश-सेवन करता है। आकाश-सेवन से उत्तरोत्तर विचारों का विकास होता है। इसलिए हमारे विचारों का भी विकास हो रहा है और हमें थकान भी नहीं महसूस होती।

हम चाहते हैं हिन्दुस्तान के प्रति पाँच हजार मनुष्यों में से एक मनुष्य ऐसा निकले, जो सतत घूमता रहे। सबकी सेवा करता रहे। समाज में सरकारी सेवक, रचनात्मक सेवक आदि जितने भी सेवक हैं, उन सबकी वह कड़ी बन जाय। उसकी कभी भी 'मन्दी गति न पड़े'।

हिंदुस्तान में से पचहत्तर हजार शांति-सैनिक हमें मिलने चाहिए। राजस्थान में से तीन हजार। नारद को तीनों लोकों में प्रवेश मिलता था। वैसे ही सेवक का प्रवेश तीनों लोकों में होना चाहिए। तीनों लोक यानी उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग। नारद अव्याहत प्रवेश था। वह कृष्ण और कंस के पास जाता था। ग्वालों और गोपियों के पास भी जाता था। वैसे ही सब जगह पहुँचनेवाला राही हमें मिलना चाहिए। यही हमारी कामना है। यह कामना तृप्त रहे, तब भी परमेश्वर को समर्पित है और अतृप्त रहे, तब भी उसे ही समर्पित है। हम चाहते नहीं कि हमारे विचार किसी पर लादे जायँ। परन्तु जिन्हें भी हमारे विचार पसंद पड़ें, वे सेवा-सेना में भरती हो जायँ। फिर वे सबका सुख-दुःख पहचानें। किसी का भी आपस में मनमुटाव हो तो उसे स्नेहपूर्वक दूर करें और उसकी मदद में सरकार के सेवक, ग्राम-सेवा-मंडल के सेवक और रचनात्मक सेवक रहें तो राष्ट्र-निर्माण का बहुत बड़ा-काम हो सकता है। ●●●

---

प्रश्नः ईसा और बुद्ध ने इतना प्रयत्न किया, फिर भी सारे सामाजिक प्रश्न हल नहीं हो सके। इसका कारण क्या है ?

विनोबाः ईसा और बुद्ध ने धार्मिक आन्दोलन शुरू किये थे। उन्होंने किसानों के प्रश्न हाथ में नहीं लिये। लेकिन मैंने आर्थिक और सामाजिक आन्दोलन ही शुरू किया है। लोक-जीवन सुखी कैसे हो सकता है ? हमारा वर्तमान कार्यक्रम इसी की एक व्यवस्थित योजना है। इसे देखकर नंबूदरीपाद जैसों को कहना पड़ा कि अगर यह काम सफल हो जाय तो फिर कम्युनिज्म की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। इससे जाहिर हो जाता है कि इस काम में कितनी शक्ति है !

●●●

## अनुक्रम

१. मालकियत की भावना मिटाने से ही सामाजिक रीति...
कायमसर १९ मार्च '५९ पृष्ठ २९७
२. सर्वोदय आन्दोलन करुणा और समानता का राज्य...
रतननगर २१ मार्च '५९ " २९८
३. मन्दी गति न पड़े रे राही, मन्दी गति न पड़े
काशीकावास १३ मार्च '५९ " ३००

●●●

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी ( उ० प्र० ) फोन : १२८५ तार : 'सर्व-सेवा', वाराणसी।